श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ नवंबर -2023

ऐनरोलमेन्ट नंबर 6 शहर _____

विद्यार्थी का नाम _____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१) विनय पूर्वक
(२) व्यापक विगुण
(३) संचित प्रतिबद्ध
(४) उद्वर्तना
(५) वर्षधर
(६) अजितनाथ प्रभु
(७) उणोदरी
(८) अंगोपांग
(९) बहुमान
(१०) संचित परिहारी
(११) आयुष्य कर्म
(१२) निकाचित
(१३) गुण रहित
(१४) चौदह नियम
(१५) सिद्धकूट
(१६) तिर्यंचगति
(१७) गमनागमन
(१८) परिणाम वाले
(१९) समचतुस्त्र
(२०) भोग तथा उपभोग

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१) सर्व व्यापक
(२) गुरुवंदन
(३) अनपवर्तनीय
(४) बहुस्कार
(५) अजितनाथ भ.
(६) संचित आहार
(७) प्रकृति
(८) विजयादेवी
(९) पापस्थानको से
(१०) स्वर्णमय
(११) क्षायिक समकित
(१२) नरक से
(१३) वीशस्थ
(१४) शांति
(१५) चौदह नियम

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१) हरा-चना
(२) षट्क
(३) ग्रंथी
(४) स्थिर / निश्चलता

(५) जन्म रहित
(६) विद्युत प्रभ
(७) ~~झुकाने से झुकाने~~
(८) तिरानवे
(९) स्पर्श
(१०) ~~विनय से झुकना~~
(११) ~~ग्यारह~~ विनयसे झुक
(१२) ग्यारह
(१३) मस्तक पर
(१४) आताप-उद्योत
(१५) प्रतिक्रम
(१६) वेग से
(१७) क्षय करते है
(१८) त्रिक
(१९) भ्रांति
(२०) व्यंतर देवो

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	4	(६)	9
(२)	6	(७)	1
(३)	8	(८)	2
(४)	7	(९)	3
(५)	10	(१०)	5

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१) 15
(२) 350
(३) 158
(४) 33
(५) 20
(६) 16
(७) 61
(८) 22
(९) 6
(१०) 14

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१) ✓
(२) ×
(३) ×
(४) ✓
(५) ✓
(६) ×
(७) ×
(८) ✓
(९) ✓
(१०) ✓

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१) 17
(२) 13
(३) 1
(४) 6
(५) 18
(६) 11
(७) 13
(८) ~~15~~ 8
(९) 15
(१०) 19

	+		+		+		+		+		+		+		=	

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. आयुष्य कर्म की विचित्रताये → यह कर्म हर समय न बँध कर भवमें एकही बार बंधता है, भव के तीसरे, नवमें और सत्तावीसवे भागमें, नहीं तो आखरी अंतर्मुहुर्त में भी बंधता है। इस कर्म का उदय चालु हो तबतक हम इच्छा करें तो भी दूसरी गति में जा नहीं सकते पर इच्छा न हो ऐसी गति में इस कर्म के उदय से जाना ही पडता है। ज्यादातर आयुष्य कर्म पर्व तिथी में ही बंधता है, इसीलिए तो कहते है की पर्व की आराधना ज्यादा से ज्यादा करो। पर्व तिथी यानी आठम, चौदस, पुनम, अमावस्या। हमे हमेशा विराधना से अटकना चाहिए और शुभ शुध्द भावमें रमण करते हुए सदगति का आयुष्य बांधाजासे ऐसा कार्य करना चाहिए। यह कर्म घट सकता है, उसकी स्थिति का अपवर्तन होता है, पर उदवर्तना तो होती ही नही यानी बढा नहीं सकते.

२. भोगोपभोग व्रत क्या है सचित्त प्रतिबद्द अतिचार समझाओ → भोगोपभोग व्रत यानी एकबार उपयोग में आये ऐसी भोग वस्तुओं का एवं बारबार उपयोग मे आये ऐसी उपभोग की वस्तुओं का नियम करना। खैर के झाड की गांठ मे से गोंद उखाडकर तत्काल उसे अचित्त समझकर खाये, गोंद तो अचित्त है पर उसे सचित्त का स्पर्श लगा हुआ है, इस कारण अभक्ष्य है, पक्की केरी चूसी हो, यह तो पका फल है ऐसा विचार करे पर उसमे गुठली सचित्त है, उसके साथ प्रतिबद्द है वो विचार नहीं करे उसी तरह रायण, बोर बीज सहित मुख मे डालकर चूसि हो, मुँह में फल का बीज घुमाते रहे हो, जो सचित्त है यह उपयोग न रखे तो सचित्त नियमवाले को सचित्त प्रतिबद्द अतिचार लगता है।

३. मंडित स्वामी की शंका और प्रभु का समाधान → मंडित स्वामी की शंका "स एव विगुणो विभर्नु बध्यते संसरति वा मुच्यते मोचयतिवा", वीरप्रभु कहते है की, इन पदो का अर्थ ऐसा कर रहा है की, सत्वादिगुण रहित आत्मा सर्व व्यापक है, वो पुण्यपाप कर्म मे बंधता नहीं है, संसार में परिभ्रमण करता नहीं है, कर्म से मुक्त होता नहीं है, दुसरे को भी मुक्त करता नहीं यह तेरा अर्थ बराबर नहीं है, इस अर्थ से ही शंका हो गयी है तुझे। तो सुन इस वेदपदों का अर्थ ऐसा है कि छद्मस्थ आदि गुण रहित वीतराग केवलज्ञानी, केवलदर्शनी ऐसी जो आत्मा ज्ञानसे सर्व व्यापक है वो आत्मा यानी मुक्तात्मा तो कर्म से बंधती नहीं है, संसार मे परिभ्रमण नही करती, सम्यग ज्ञान-दर्शन, चारित्र की आराधना कर कर्म से मुक्त भी होते है, मुक्त भी कराते है, वीरप्रभु के ऐसे बोधसे मंडित स्वामी प्रतिबोध पाकर प्रभु के पास दिक्षा ग्रहण करते है।

४. तीन प्रकार के गुरु वंदन → १) फेटा वंदन, २) थोभ वंदन ३) द्वादशावर्त वंदन

फेटा वंदन - दो हाथ जोडकर मस्तक झुकाकर वंदन करना यह फेटा वंदन होता है। फेटा वंदन समस्त श्री संघको किया जाता है। ② थोभ वंदन - दो खमासमणा देकर इच्छकार सह सुख शाता पुछकर अब्भुठियो के पाठ द्वार वंदना यह थोभ वंदन कहलाता है, यह वंदन गुरुभगवंतोंको करते है। ③ द्वादशावर्त वंदन → यह वंदन इर्यावहिय-पडिक्कमामी - लोगस्स का काउसग्ग करके, मुहपत्ती पडिलेहण कर वांदणा देकर विधि पूर्वक अब्भुठियो खमाकर कीया जाता है। आचार्य-उपाध्याय पदस्थ को ही यह वंदन किया जाता है, फिलहाल गच्छाधिपति को ही यह वंदन करने का व्यवहार है।

५. अजितशांति स्तव की गाथा २०-२१ का गाथार्थ → सुवर्णकुमार, असुरकुमार देवताओं द्वारा वंदना किये गये, किन्नर और व्यंतर देवताओं द्वारा नमस्कार किये गए, शतकोटि देवताओं द्वारा स्तुति किये गए, साधुओंके संघ द्वारा वंदना किये गये, पापरहित, भयरहित, पापरहित, रोग रहित, कर्मरहित जन्म रहित और किसी से भी पराभव नहि पाये, पराजय नहीं हुआ ऐसे देवाधिदेव अजितनाथप्रभु को मैं तत्परता पूर्वक प्रणाम करता हूँ।